उफ ! क्या मंज़र था वो

– संजय कुमार यादव

एक ऐसा दौर इंसानियत के रस्ते से गुजरा है जहां एक वक्त की रोटी और दवाई जिंदगी की सबसे बड़ी आवश्यकता के रूप में एक बार फिर सामने आयी और इन मूलभूत जरूरतों के आगे तमाम बड़े–बड़े वादे और बातें बौनी पड़ गयीं।

कोविड–19 महामारी के चलते सबकी जिन्दगी में उथल–पुथल मची है। जिस दिन देश में लॉकडाउन की घोषणा हुई। उस दिन रोड पर एक अलग तरीके का नजारा था। लोग खाने की सामग्री खरीदने के लिए जैसे टूट पड़े। लोग बाइक और कारों में सामग्री भर–भर कर ले जा रहे थे। जैसे लग रहा था कि बस इनके ही बच्चे या परिवार हैं उनको बचाना है। जरा उनके बारे में विचार करें जो लोग रोज कमाते हैं तभी उनके घर चूल्हा जलता है। क्या वे लोग भी एक माह का राशन अपने घरों में भर रहे हैं। यह विचार करने योग्य है।

24 मार्च 2020 से जब देश में पूरी तरह से लॉकडाउन घोषित हुआ जैसे देश की रफ्तार थम सी गयी। सड़कें वीरान नजर आने लगी। जहां इन्सानों की चहल–पहल थी वहां जानवरों की ज्यादा चहल–पहल दिखने लगी। टी.वी. देखो तो केवल कोरोना का समाचार दिख रहा है। हर इन्सान दहशत में जिन्दगी जीने लगा। पता नहीं कि अब क्या होने वाला है। लेकिन जो लोग गरीब या झोपड़ी में अपने दिन काट रहे थे उनका क्या होगा। इस पर भी बातचीत होने लगी। सरकार की तरफ से उनको पका खाना या राशन किट उपलब्ध करने का बीड़ा उठाया गया। बहुत हद तक प्रयास सकारात्मक था। लेकिन जो ज्यादा जरूरतमंद थे वे छूटते जा रहे थे। कुछ संस्थाओं ने भी अपने स्तर से प्रयास जारी रखा और जरूरतमंद लोगों की भूख मिटाने का प्रयास किया जो काफी नहीं था। इसी बीच हमारी संस्था ने यह निर्णय लिया कि हम लोग जरूरतमंद लोगों की सहयता करेंगे। इसको लेकर टीम में बातचीत करते रहे। लेकिन समझ में नहीं आ रहा था कि शुरुआत कहां से करें।

एक दिन मैंने निश्चय किया कि शहर में क्या चल रहा है, पहले मैं उसको समझ लूं। सुबह 6 बजे मैं निकला ठेला

फोटोः पुरूषोत्तम ठाकुर

पुल की तरफ जहां कुछ लोहे के काम करने वाले समुदाय के लोग रहते थे। जब झोपड़ी के पास खड़ा हुआ तो कुछ लोग अंदर से बाहर आये और कहा साहब क्या, आज खाना मिलेगा बच्चे कल से भूखे हैं। उनकी बातें सुनता रहा लेकिन मेरे पास कोई सामान नहीं था कि मैं उनकी मदद कर पाता। उन लोगों ने कहा कि रोज कोई न कोई आता है और हमसे राशन कार्ड या आधार कार्ड मांगता है। साहब हमारे पास ये सब नहीं है कहां से लाऊं। उनके बच्चे भूख से रो रहे थे। वहां से दुखी मन से घर वापस लौटा। लेकिन मैंने मीडिया रसोई में बातचीत कर उनको उस दिन खाने का इंतजाम किया। इसको लेकर मैंने आशीष भाई से और राजीव भाई से बातचीत कर उनको राशन देने का निर्णय कर लिया और जल्द ही प्रक्रियाओं को पूरा करते हुए उन तक राशन पहुंचाया। उस दिन मुझे सबसे ज्यादा खुशी मिली कि मैंने ऐसे लोगों की मदद की जो खाने को लेकर जिन्दगी की जंग लड़ रहे थे। जिस दिन उनको राशन दिया जा रहा था उन लोगों का कहना

था बाबू आपको तो आधार कार्ड नहीं चाहिए। मैंने हंसते हुए जबाब दिया नहीं। क्या इस परिस्थिति में भी पहचान की जरूरत है। उस दिन से मैंने अपनी दिनचर्या बदल दी रोज सुबह ऐसे लोगों की तलाश करना जो भूख से जंग लड़ रहे थे। एक दिन मैं कुष्ठ आश्रम गया जहा का नजारा कुछ और था। पहले वे लोग रोड या स्टेशन पर बैठकर मांग लेते थे। लेकिन वह भी लॉकडाउन के चलते बंद हो गया। कुछ लोग उनको एक समय का खाना दे देते दूसरे वक्त वे भूखे रहते थे। जब मैं उनसे मिलने गया तो उन लोगों ने अपनी व्यथा सुनाई। मैं आश्रम के बाहर खड़ा था सभी लोग बाहर आने लगे एक वृद्ध व्यक्ति ने कहा कि क्या आप हम लोगों के साथ बैठ नहीं सकते। उनकी बात सुनकर मैं मजबूर हो गया। लेकिन दिल से कहूं तो अंदर से डर था कि यदि मुझे कुछ हो गया तो मेरे बच्चों को भी मुसीबत आएगी। मैं इस भावना से निकलते हुए उनके साथ अन्दर गया। जहां देखकर बहुत दुःख हुआ और उसी दिन उनको खाने की पर्याप्त सामग्री की व्यवस्था करवाई। जिससे कम से कम 15 दिन तक वे लोग किसी पर आश्रित न रहें। जिस वृद्ध व्यक्ति के साथ मैं अन्दर जाकर बैठा था जब चलने लगा तो उसके दोनों हाथ ऊपर थे कहा बाबू आपको मेरी जो बची उम्र है वह मिल जाय। अब इस जिन्दगी से ऊब गया हूं। इस पूरी प्रक्रिया में खंड शिक्षा अधिकारी (आर. एस.नेगी), उपशिक्षा अधिकारी (गीतिका जोशी), सी. आर.सी. (सुरेश सिंह) और सी.आर.सी. (हरीश जोशी) का बहुत बड़ा सहयोग रहा। ऐसी बहुत सी घटनायें इन 15 दिनों में सामने आई।

एक दिन मैं सुबह जा रहा था तो देखा एक कूड़ा बीनने वाला 45 साल का व्यक्ति कूड़े में फेकी गयी रोटी निकाल रहा था। मैंने उनसे रुककर पूछा दादा आप कूड़े की रोटी क्यों निकाल रहे हो। वह रोते हुए कहा कि साहब मेरे बच्चे दो दिन से कुछ नहीं खाए हैं। यह उनके लिए बीन रहा हूं। मेरा जवाब था कि दादा सरकार तो राशन बांट रही है आपको नहीं मिलता क्या? उसने कहा कि जब हम लोग जाते हैं तो लोग लाइन से भगा देते हैं। कुछ नहीं मिलता। उसकी दर्द भरी कहानी सुनकर मैं उसको अपने साथ ले आया और राशन की सामग्री देकर विदा किया। मुझे तो ऐसा लगने लगा कि जितना लोग महामारी से मरेंगे उससे ज्यादा तो भूख से मर रहे हैं। आखिर इन लोगों के रहनुमा कहां गये। कौन इनके दर्द को समझेगा। ऐसे बहुत से लोगों से मेरी मुलाकात हुई। जो जिन्दगी और भूख की जंग लड़ रहे हैं।

एक घटना आप लोगों के साथ और साझा करना चाहूंगा। 24 अप्रैल को मैं अपनी पत्नी की दवा लेने सिद्धविनायक हॉस्पिटल जा रहा था तो करीब 200 मीटर की दूरी पर पति–पत्नी और साथ में 2 बच्चे लिए एक परिवार धूप में बैठे रो रहे थे। उनके वस्त्रों का मैं वर्णन नहीं कर सकता हूं। इस समय की जो स्थिति है 1 बजे के बाद रोड पर कोई नहीं दिखता। मैंने अपनी बाइक रोककर उनसे पूछा भैया क्या दिक्कत है। औरत अपने बच्चे को दिखाते हुई चिल्लाने लगी बाबू मेरा बच्चा मर जायेगा। बचा लो पैर पड़कर रोने लगी। बच्चे की नाक से खून निकल रहा था। मैंने कहा कि आप डाक्टर को दिखाइए। आदमी ने कहा बाबू मेरे पास 240 रुपये थे 200 डॉक्टर को दे दिया। दवा का पैसा नहीं है मेडिकल वाले ने भगा दिया। मैंने कहा कि दवा का पर्चा कहां है आदमी ने हमको दिखाया मैंने देखा कि 24 अप्रैल का ही पर्चा था और दवा लिखी हुई थी। मैं बाइक खड़ी कर आदमी को लेकर मेडिकल पर गया। उसकी दवा दिलवाई जो की 1486 रुपये की पड़ी। दवा लेकर हम लोग बच्चे के पास आये और पानी से बच्चे को दवा पिलायी। यह 7 दिन की दवा थी। मैंने पूछा आप लोग खाना खाए हो। उन लोगों ने कहा बाबू 2 दिन हो गये खाना खाए। तत्पश्चात मैं मेडिकल के पीछे गाँव में गया जहां एक आदमी ने आधा शटर खोला था। उससे 5 बिस्कुट के पैकेट लिए और लाकर उनको दिया। अंत में मैंने 475 रुपये उनको देकर चला गया। पता नहीं उनका और बच्चे का क्या हुआ होगा मेरे जीवन का सबसे दर्दनाक पल था। मैं वापस घर चला आया। आज भी इन्सान–इन्सान को नहीं पहचान रहा है।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन काशीपुर, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)